वसंत पंचमी: प्रकृति की नवसृष्टि और आत्मा के नवजीवन का संगम

वसंत पंचमी केवल ऋतु परिवर्तन का पर्व नहीं है, बल्कि यह आत्मा के जागरण, नवीनीकरण और उन्नति का पावन संदेश लेकर आती है। बाबा की शिक्षाओं के अनुसार, जैसे वसंत में प्रकृति पुराने, सूखे पत्तों को छोड़कर नई कोमल हरियाली, पुष्पों और सुगंध से स्वयं को सजा लेती है, वैसे ही आत्मा को भी अपने जीवन से पुराने संस्कारों, कमज़ोरियों और नकारात्मकताओं को त्यागकर ज्ञान, योग और पवित्रता से स्वयं को नवीन बनाना चाहिए। वसंत पंचमी फिज़ा में उमंग भरने के साथ-साथ आत्मिक जीवन में भी नई रोशनी और नई दिशा देने वाला आध्यात्मिक पर्व है।

वसंत पंचमी केवल ऋतु परिवर्तन का पर्व नहीं है, बल्कि बाबा की शिक्षाओं के अनुसार यह आत्मा के नवजागरण और उन्नति का विशेष संकेत है। बाबा हमें सदा समझाते हैं कि जैसे प्रकृति अपने पुराने पत्तों को छोड़कर नई कोमल पत्तियों से स्वयं को सजाती है, वैसे ही आत्मा को भी पुराने संस्कारों, कमज़ोरियों और विकारों को छोड़कर श्रेष्ठ और पवित्र संस्कार धारण करने चाहिए। वसंत पंचमी आत्मिक जीवन में "नई शुरुआत" का प्रतीक है।

बाबा कहते हैं कि आत्मा मूल रूप से सत्-चित्-आनंद स्वरुप है, लेकिन कलियुग में आते-आते आत्मा पर जंग लग जाती है- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की। वसंत का संदेश यही है कि अब यह जंग उतारो। जैसे बसंत में जड़ता समाप्त होती है और सृष्टि में हलचल, सुगंध और जीवन का संचार होता है, वैसे ही आत्मा में भी योग, ज्ञान और पवित्रता से नई चेतना का संचार होना चाहिए।

बाबा वसंत पंचमी को ज्ञान-वसंत कहते हैं। इस दिन ज्ञान की देवी सरस्वती को याद किया जाता है, और सरस्वती अर्थात् सद्गुणों से भरपूर बुद्धि। जब आत्मा परमात्मा से ज्ञान लेती है, तो उसकी बुद्धि सात्विक बनती है, विचार शुद्ध होते हैं और जीवन में स्पष्टता आती है। यही आत्मा की वास्तविक उन्नति है। बाबा कहते हैं-"बच्चे ज्ञान को जीवन में धारण करो, तभी परिवर्तन दिखाई देगा।" प्रकृति के साथ सामंजस्य की बात करते हुए बाबा बताते हैं कि प्रकृति आत्माओं की अवस्था का प्रतिबिंब है। जब आत्माएँ पवित्र और शांत होती हैं, तब प्रकृति भी सहयोगी और सुंदर बनती है। वसंत में धरती का श्रृंगार, फूलों की बहार और मधुर वातावरण इस बात का संकेत है कि अब समय है सतयुगी संस्कारों को अपनाने का। बाबा कहते हैं कि जो आत्मा अपने अंदर वसंत लाती है-अर्थात् उत्साह, उमंग और पवित्रता-वही विश्व में भी वसंत लाने वाली बनती है।

बाबा हमें यह भी सिखाते हैं कि वसंत पंचमी पर केवल बाहरी उत्सव न मनाएँ, बल्कि आंतरिक वसंत लाएँ। इसका अर्थ है- मन से निराशा, आलस्य और नकारात्मकता को हटाकर आशा, उमंग और श्रेष्ठ संकल्पों को धारण करना। जैसे पीला रंग आनंद और प्रकाश का प्रतीक है, वैसे ही आत्मा को भी ज्ञान के प्रकाश से चमकना चाहिए।

बाबा के अनुसार आत्मा की उन्नति के तीन मुख्य आधार हैं- पवित्रता, योग और ज्ञान। वसंत पंचमी इन तीनों की याद दिलाती है। पवित्रता से आत्मा हल्की बनती है, योग से शक्ति मिलती है और ज्ञान से दिशा। जब ये तीनों जीवन में आ जाते हैं, तब आत्मा फूल की तरह खिल उठती है और उसकी सुगंध चारों ओर फैलती है। अंततः, बाबा की दृष्टि में वसंत पंचमी हमें यह संदेश देती है कि अब पुराना छोड़कर नया अपनाने का समय है। आत्मा अपनी वास्तविक पहचान को पहचाने, परमात्मा से जुड़कर स्वयं को नवीनीकृत करे और प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर विश्व-कल्याण का माध्यम बने। यही वसंत पंचमी का सच्चा, आध्यात्मिक और समन्वित स्वरुप है।

मन्सा सेवा के लिए वेरीफाई करें कि बाबा हमसे क्या चाहते हैं

हम सबके मन में यही संकल्प है कि हमें बाबा के हाथ में हाथ दे करके साथ चलना है। बाबा जैसा बनना है। हम सबने बाबा से वायदा किया है कि बाबा आपके साथ ही चलना है, तो बाबा जैसा समान बनना है। तो चेक करो कि हम बाबा जैसा कहाँ तक बना हूँ? बाबा क्या है और हम क्या हैं? बाबा से मिलन मनाते हैं तो बाबा की सूरत से, मूरत से बाबा के गुण, बाबा की शक्तियाँ सब दिखाई देती हैं। उनको देख करके हमको अपने आपको चेक करना है, जब बाबा हमारे सामने आता है तो वही दर्पण बन जाता है।

बाबा सभी बच्चों को अपने समान बनाने चाहता है। तो समान बनने की बहुत सहज युक्ति है – कोई भी कार्य करने के पहले चेक कर लो कि यह बाबा ने किया? मानो मन्सा संकल्प है तो यह हमको करने के पहले चेक करना चाहिए कि हमारे संकल्प बाबा के समान हैं! बाबा जो कहते हैं बच्चे मन्सा सेवा करो तो हम उसी प्रमाण मन्सा सेवा करते हैं? बाबा की मन्सा में हम एक-एक बच्चे के लिए बाबा के दिल में क्या है? जो कल पुरूषार्थी हैं उनके लिए भी बाबा को इतना ही प्यार है जितना औरों से है। तो कम पुरूषार्थियों के लिए बाबा का प्यार भी है, रहम भी है। नम्बरवार तो सभी हैं ना, इसकी ही यादगार माला है। पुरूषार्थी तो सभी हैं लेकिन नम्बरवार तो हो ही जाते हैं, तो कुछ भी कमी है उसके ऊपर रहम आता है या दूसरा कुछ आता है जो होना नहीं चाहिए?

बाबा ने हमारी अभी दो कमज़ोरियाँ सुनाई हैं, एक बाबा ने कहा जो मैंने कहा है सैकण्ड में बिन्दी लगाओ, बिन्दी बन जाओ और बिन्दी को देखो क्योंकि आगे चल करके ऐसा समय आने वाला है जो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अगर अभ्यास नहीं होगा तो हम उस पेपर में पास नहीं हो सकेंगे क्योंकि वह पेपर अचानक आना है। पेपर की डेट आउट नहीं होनी है, अचानक होना है। दूसरा उस समय हालतें ऐसी होंगी जो आप पुरूषार्थ करो कि सैकण्ड में पुरूषार्थ करके बिन्दी लगा दूँ, तो वह समय ही नहीं होगा। आजकल भाव-स्वभाव, पुराने संस्कार ही विघ्न डालते हैं और बाबा ने कहा कि संस्कार मिलन के रास की डेट फिक्स करो। तो उस डेट के लिए तैयार हो? अब बाबा का कहना और हमारा करना साथ-साथ होना चाहिए।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

समर्पित भाइयों के प्रश्न, दादी जी के उत्तर

प्रश्नः- आप जब बाहर जाती हैं तो क्या मधुबन की चिंता रहती?

उत्तर :- मधुबन से बाहर जाते तो मुझे चिंता नहीं रहती, परन्तु जब कोई काम-काज हो तो समझते दादी प्रेजेन्ट होनी चाहिए। बहुत टाइम दूर नहीं होनी चाहिए। सेवा के निमित्त याद करते। बाकि सीजन के समय मुझे कोई सिरदर्द नहीं होता। बाबा के कार्य में व्यस्त रहो तो कभी कोई थकावट महसूस नहीं होती। मैं 18 घंटा भी सेवा में बिज़ी रहती लेकिन कभी ऐसी थकावट नहीं होती। 10 मिनट भी आँख मीची तो फ्रेश हो जाती। मैं नींद करने जाती तो आधे मिनट में नींद आ जाती। मैं किसी बात के चिंतन व चिंता में अपनी नींद नहीं फिटाती। न किसी बात का इफेक्ट मेरी तबियत पर आता। बाबा का थैंक्स है - मुझे कभी मन का या मुख का रोना आता नहीं। बाबा ने स्थिर रहने की, सामना करने की शक्ति दी है। इसलिए बाबा का प्यार है, कृपा है... चलती बाबा के नाज पर हूँ, बाबा के सिवाए मेरा और कुछ नहीं। बाबा ने हमारे ऊपर सारी सृष्टि को पावन करने की ज़िम्मेवारी रखी है। यह हमारा संगम पर कर्त्तव्य है। इसलिए यहाँ रहते विश्व के प्लैन चलते। देश-विदेश बुद्धि में घूमता रहता। बाबा के सब बच्चे याद आते। वह याद करते तो हमें भी याद आते। पर याद आते भी याद नहीं। बाबा की सीजन होती तो भल कितना भी काम बढ़ जाता, एक का 10 गुणा काम हो जाता लेकिन मुझे बोझ महसूस नहीं होता। मैं ऐसा कभी नहीं सोचती कि अब कौन इतना झंझट करे। बाबा के बच्चे आते, सभी को खुशी होती। मुझे उन सभी का प्यार मिलता। मैं बोझ समझती ही नहीं।

प्रश्नः- बाबा तो आपके साथ है ही, लेकिन आपका कोई गुप्त पुरूषार्थ है?

उत्तर :- हाँ - हर बात में मैं बाबा के साथ-साथ अपने आपमें फुल पॉवर रखती। समझो कोई संकल्प आता है तो बाबा की शक्ति उसे समाप्त कर देती। आया और फुलस्टॉप लगा। मैं किसी बात में वीक नहीं समझती। बाबा ने जो अनेकानेक शक्तियां दी हैं, उनको मैं अपने साथ रखती हूँ। यह मेरा पुरूषार्थ है। किसी भी बात में मैं वीक हूँ - तो ये मेरे रजिस्टर पर दाग हो जाए। बाबा ने हमें 100 विजयी कहा है तो किसी भी बात में मेरी मार्क्स कम न हो। न दिल में दाग, न मन में दाग, न स्थिति में दाग, न रजिस्टर में दाग... यही अटेन्शन सदा रहता है। सुबह से रात तक अपने ऊपर फुल अटेन्शन है। संकल्प पर, बुद्धि पर, आँखों पर, मुख पर सब बातों पर अटेन्शन है। मैं अटेन्शन लूज छोड़ती ही नहीं।

प्रश्न :- हम ऐसा कौन-सा पुरूषार्थ करें जो सदा आगे बढ़ते रहें?

उत्तर :- उसके लिए अपना रजिस्टर हर बात में राइट रखो। किसी भी बात में रजिस्टर पर दाग न आये। मन्सा, वाचा, कर्मणा हर बात में अपना रजिस्टर बिल्कुल साफ, स्वच्छ, सच्चा, राइट रहना चाहिए। यही है आगे बढ़ने का पुरूषार्थ।

प्रश्न :- यदि हमें माला में आने की या सम्पूर्ण बनने की इच्छा है, तो क्या इसे कामना नहीं कहेंगे?

उत्तर :- यह कामना नहीं - यह पुरूषार्थ है। श्रेष्ठ पुरूषार्थ का लक्ष्य तो हरेक को रखना चाहिए। अगर लक्ष्य श्रेष्ठ नहीं होगा तो पुरूषार्थ कैसे करेंगे। जितना पुरूषार्थ करो, रेस करो उतना अच्छा है।

प्रश्न :- आपने अपनी अवस्था किस विशेष पुरूषार्थ से ऐसी बनाई है? क्या आपका शुरू से ही ऐसा पुरूषार्थ है?

उत्तर :- मेरा हर धारणा पर पूरा अटेन्शन है। बाबा माना धारणामूर्त। मेरे से किसी भी प्रकार की देह अभिमान के वश गलती नहीं होनी चाहिए। अगर रिचक हो जाएगी तो मैं उसे पूरा कवर करूँगी, मिटा दूँगी। मुझे उसे मिटाने में 5 सेकण्ड भी नहीं केवल सेकण्ड लगता है। आदि से ही मेरा अपनी धारणाओं पर अटेन्शन है। सेन्टर पर रहते भी मैं हमेशा यह ध्यान रखती थी कि ऐसा कोई कर्म न हो जो मेरी रिपोर्ट निकले या मेरी शिकायत बाबा तक जावे।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

सन-बाथ करो तो अन्दर की सब बीमारियां खत्म हो जाएंगी

बाबा एक तो ज्ञानसूर्य है, दूसरा ज्ञान का सागर है। बाबा ज्ञान सूर्य है तो प्रकाश भी देता और कीचड़ा भी भस्म करता है। मुझे क्या करना है, वो समझ देता है - यह हुआ प्रकाश। जैसे सन-बाथ(सूर्य-स्नान) सब बिमारियों को खत्म करता है। तो हम सन-बाथ कैसे करेंगे? सन-बाथ लेना है तो कपड़े उतारेंगे ना, तब तो सन-बाथ लेना है तो अशरीरी होना है, जिससे अन्दर से सारे जर्म्स खत्म हो जायें। सन-बाथ लेते हैं तो सारा शरीर लाल-लाल हो जाता है क्योंकि डायरेक्ट सूरज की किरणें शरीर पर पड़ती हैं। ऐसे यहाँ भी बाबा के सामने एकदम अशरीरी होकर बैठना चाहिए, तो पता चल जाता है कि अन्दर जो बिमारी थी वो निकल गई इसलिए ज्ञान सूर्य बाबा से खूब अच्छी तरह से सकाश लो, न सिर्फ रोशनी, पर उसकी शक्ति डायरेक्ट अन्दर जाती है तो पुराना सब ऑटोमेटिक खत्म होता है। लेकिन यह ढीले-ढीले पुरूषार्थ से नहीं होगा।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

कई कहते हैं हम तो बहुत अच्छा पुरूषार्थ करते हैं। यह भी जैसे अपने आपसे ठगी करते हैं, बाबा से भी ठगी करते हैं। पुरूषार्थ में दिखाते कुछ और हैं, होता कुछ और है इसलिए कम-से-कम पुरूषार्थ में ठगी मत करो। जैसा बाबा मेरा सत्य है, सच है, वैसा मैं हूँ? यह अपने आपको अच्छी तरह देखो। सेवा तो हुई पड़ी है, हो जाएगी, कोई बड़ी बात नहीं है। परन्तु अपने को सच्चा बनाना- ये बड़ी बात है। इसमें सूक्ष्म पुरूषार्थ की जरूरत है। आत्मा के चित्त की स्मृति को समर्थ बनाने की जरूरत है। लक्ष्य और लक्ष्य-दाता की याद कभी भूले नहीं। क्या बनना है, बनाने वाला कौन है? यह पक्का याद रखना है तभी तो लक्ष्य हमारे स्वरूप में आ जायेगा।

ज्ञान और योग की ताकत से हम कमल फूल समान न्यारे रह सकते हैं। स्व का दर्शन, पर-दर्शन और पर-चिंतन से छुड़ाता है। स्व-दर्शन के बिगर पर-दर्शन, पर-दोष से छुटकारा हो नहीं सकता है। इसके लिए स्व पर और पढ़ाई पर अच्छी तरह से ध्यान देना है। बाबा कहते हैं अच्छे बच्चे जो होते हैं- वो सारा दिन बाबा की बातों का सिमरण करते हैं कि बाबा ने क्या कहा? बाबा जो कहता है वही मन में, पुरूषार्थ में चलता है और कुछ नहीं चलता है।

मनमत क्या होती है - यह हमको अनुभव ही नहीं है। मेरा विचार ऐसा है... यह संकल्प भी कभी नहीं आया होगा। जो श्रीमत है, उस पर चलने के लिए सखा रूप से नेचुरल रहे हैं। सखा को समानता में रहना शोभता है। मीठा बाबा कहता है - पुरूषार्थ करते रियलाइज़ेशन से अन्दर ही अन्दर अपने अभिमान को खत्म करो। पहले तो अन्दर से यह इच्छा हो कि अभिमान को खत्म करना है। सच्ची दिल से पुरूषार्थ क्या होता है? यह गहराई से बुद्धि में स्पष्टीकरण हो। बाकि किसकी गलती है या नहीं है उसमें हमारा क्या जाता है, बाबा जाने वो जाने... हमारे से कोई गलती न हो। दूसरे को शिक्षा देना छोड़ दो। जो प्यारे मीठे बाबा की शिक्षाएं हैं वो अपने जीवन में हो। औरों के लिए क्या, सबके लिए शुभ चिंतक रहना, किसी के लिए कभी निराश नहीं होना, हमेशा शुभ-भावना से सहयोग देना। यह बहुत सूक्ष्म ध्यान रखना माना अपने को शुद्ध आत्मा, पुण्य आत्मा, महान आत्मा, धर्म आत्मा बना देना, इसके लिए दिल से सच्चा पुरूषार्थ करते रहो, बस। इसमें विघ्न आयेंगे तो निराश नहीं होना, ढीले नहीं पड़ना। जो ऐसा अपने ऊपर ध्यान रखता है वह व्यर्थ ख्यालातों से मुक्त हो मनमनाभव सहज हो जाता है।